"हम अपनी समस्याओं को ~~उन्हीं~~ उसी सोच से हल नहीं कर सकते, जो हमने उन्हें बनाते समय अपनाई थी।"

72+71 = 143/250

very good

[redacted]

good example

keep it up

आर्मस्ट्रांग पामे, मणिपुर

बैच के आईएएस अधिकारी, यदि ये भी नौकरशाही के पारंपरिक ढांचे में उलझे रहते तथा एकदम पारंपरिक तरीकों से ही कार्य करते तो मणिपुर की नागालैंड व असम से संपर्क की सुविधा की समस्या बनी ही रहती। पर इन्होंने एक नए प्रकार से सोचा तथा जनता को भागीदार बनाकर 100 किमी लंबी 'पीपुल्स रोड' बना डाली।

ये ऐसे कई उदाहरणों में से एक है, जिससे हमें सीख मिलती है कि यदि समस्या का निर्माण एक प्रकार की सोच से हुआ है तो हल करने के लिए हमें दूसरी या यों कहें नयी प्रकार की सोच की आवश्यकता होगी।

उपरोक्त कथन पर विस्तृत चर्चा करें तो हमें मुख्यतः दो आयामों पर बात करनी होगी – पहला यह कि क्यों हमें पुरानी सोच के साथ सफलता नहीं मिलेगी? तथा दूसरा यह कि नयी सोच कैसे समस्या को हल करने में सहायक रहेगी। तथा दोनों पक्षों पर उपलब्ध उदाहरणों के माध्यम से यह चीज समझी जा सकेगी।

प्रश्न का प्रथम भाग है -
हम उसी सोच से समस्या हल नहीं
कर सकते, जिससे हमने समस्या
बनाई है - क्योंकि जो सोच समस्या
का निर्माण कर रही है उसी का
प्रयोग समस्या दूर करने की जगह
उसे बढ़ाता ही जाएगा। यदि औद्योगिक
विकास के लिए पेड़ काटना, प्रदूषण
पैदा करता है तो हमें पेड़ काटने
जाने की यह सोच तो बदलनी ही होगी।

इसकी पुष्टि हमें कई उदाहरणों
के माध्यम से देखने को मिलती है।
ऐतिहासिक स्तर पर देखें तो फ्रांस
की क्रांति मूलतः राजतंत्र के विरुद्ध
लोकतंत्र की स्थापना हेतु हुई

थी, जबकि नेपोलियन द्वारा इसका फायदा उठाकर खुद अपना सैन्य तंत्र स्थापित कर देना समस्या को सुलझाने वाला नहीं और बढ़ाने वाला कदम साबित हुआ। औपनिवेशिक सत्ता के शासन से मुक्ति के बाद उसी रास्ते पर चलकर पाकिस्तान का सैन्य शासन अपनाना भी किस प्रकार विध्वंशक रहा यह उदाहरण सबके सामने है।

स्पष्ट है कि अगर समस्या को दूर करना है तो उस सोच को दूर करना होगा, जिसने समस्या को जन्म दिया, दूसरा आयाम यही है कि यदि नयी सोच अपनाई जाएगी तभी हम तर्कपूर्ण ढंग से समस्या व कारण समझ पाएंगे तथा विभिन्न प्रकार

के हल ढूंढ पाएंगे, जैसा कि अल्बर्ट आइन्सटाइन ने कहा है -

"यदि मानव जाति को बचाना है, तो हमें बिल्कुल नयी सोच की आवश्यकता होगी।"

अब यदि हम विभिन्न क्षेत्रों के उदाहरणों के माध्यम से देखें तो प्रथम व द्वितीय दोनों आयाम सिद्ध हो जाएंगे। ऐतिहासिक रूप में अशोक द्वारा युद्ध त्यागकर धम्म का मार्ग अपनाना प्रमुख है, क्योंकि हिंसा, क्रूरता आदि समस्याओं का हल युद्ध या प्रतिहिंसा नहीं वरन करुणा व दया जैसी नयी सोच थी।

इसी प्रकार सत्ता के केंद्रीकरण या जनता से दूरी की समस्या राजकुमारों को प्रांतों में राज्यपाल बनाकर भेजने से नहीं वरन् चोल साम्राज्य की तरह स्थानीय स्वशासन व जनता की भागीदारी सुनिश्चित करने से दूर हुई। आधुनिक युग में गांधी का यह कहना कि- 'आंख के बदले आंख संपूर्ण विश्व को अंधा बना देगी' यही बताता है कि हिंसा को हिंसा नहीं, प्रेम ही समाप्त कर सकता है।

सामाजिक क्षेत्र में देखें तो वर्षों से चली आ रही जातिगत शोषण, लैंगिक दमन व धार्मिक पाखंड की अवस्था का हल इसी से उलझकर नहीं वरन शिक्षा, राजनीतिक सुधारों आदि के द्वारा किया जा सकता है, यह

बात डॉ. भीमराव अंबेडकर ने स्थापित की। यदि रोजा पार्क्स बस में अपनी seat छोड़ने से मना नहीं करेंगी तो अमेरिका में अश्वेतों को अधिकार दिलाने का आंदोलन कैसे शुरू होगा?

आर्थिक क्षेत्र में कार्ल मार्क्स को क्रांति की अवधारणा देनी पड़ी जैसे लोगों की दया की अपील कोई तंत्र नहीं सुन रहा था। 1991 में भारत को अपने भुगतान संकट से निकलने के लिए अपनी लालफीताशाही व सरकारी उद्यमों की सोच बदलनी पड़ी।

राजनीति के क्षेत्र में देखें तो जो अंग्रेज शासन की प्रवृत्ति थी, अगर आजादी के बाद पहली कैबिनेट वही अपनाती तो समस्याएं कैसे दूर होतीं, इसलिए उसमें हर दल के लोगों को शामिल किया गया। द्वितीय विश्व युद्ध का हल शीतयुद्ध नहीं युद्धनिरपेक्ष आंदोलन के माना जाएगा।

परंतु अगर सब कुछ ऐसा ही सीधा होता तो दुनिया में हर समस्या पर एक नयी सोच अपना ली जाती तथा सभी समस्याएं हल हो जातीं। हर बार एक नयी सोच सही ही होगी यह कहाँ जरूरी है? मुहम्मद बिन तुगलक का देश के बीचोबीच

से शासन करना जरूर एक नया प्रयोग था, पर असफल रहा। पूर्वी एशियाई देशों का 1990 के दशक में पूर्ण पूंजी खाता परिवर्तनीयता लागू करना नवाचार ही था पर उसका परिणाम महंगाई व उनकी मुद्रा का अवमूल्यन रहा।

हाल ही में समाप्त हुई आस्ट्रेलिया व इंग्लैंड क्रिकेट टीमों की एशेज श्रृंखला में आस्ट्रेलिया के ओपनर उस्मान ख्वाजा ने लगभग इंग्लैंड के ओपनर जैक क्राली जितने ही रन बनाए पर उनसे दोगुनी ज्यादा गेंदें खेलीं। पुरानी वल्लेबाजी सोच

के साथ व्यवस्था की सफलता तथा नयी सोच के साथ क्रांति की सफलता, इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि सोच के साथ- साथ उसका क्रियान्वयन भी उतना ही जरूरी है।

इस प्रकार संपूर्ण चर्चा का सार यही है कि समस्या को हल उसी सोच से नहीं किया जा सकता, जिससे वह बनी है यद्यपि नयी सोच का प्रभावी क्रियान्वयन भी आवश्यक है। वर्तमान में यूनाइटेड नेशंस जैसे संस्थानों में कुछ ही देशों का प्रभुत्व, प्रथम विश्व युद्ध के बाद उसी लीग आफ नेशंस जैसा है, जो द्वितीय विश्व युद्ध नहीं रोक

पायी थी। हालांकि उड़ीसा में बस में पहली सवारी के रूप में महिला के चढ़ने की को अपशकुन मानने की प्रथा का त्याग बदलती सोच के भी कई उदाहरणों में से है। इस संबंध में हमेशा नयी सोच की आवश्यकता होगी, जो भवानी प्रसाद मिश्र के शब्दों में इस प्रकार है-

"ये किसी निश्चित नियमक्रम की सरासर सीढ़ियाँ हैं,
पांव रख कर बढ़ रही जिन पर कि अपनी पीढ़ियाँ हैं।
बिना सीढ़ी के बढ़ेंगे, तीर के जैसे बढ़ेंगे,
इसलिए इन सीढ़ियों के छूटने का सुख
छूटने का सुख।"

Keep it up

72/125

very good

You dick the all boxes
- flow ✓
- language ✓
- example diversity ✓
- connectivity ✓

"बुद्धि का माप, परिवर्तन करने की क्षमता है।"

जून 2023 में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की तीन दिवसीय अमेरिका यात्रा ने वैश्विक स्तर पर चर्चा जुटाई। 1971 के भारत-पाक युद्ध के दौरान अमेरिका की पाकिस्तान को मदद के बाद भारत-अमेरिका संबंध खराब ही रहे; पर आज के समय की आवश्यकता के कारण भारत ने अपनी नीति में बदलाव किया, जो कि किसी भी बुद्धिमान देश को करना चाहिए।

सर्वप्रथम विस्तार में जाने से पहले हमें यह समझ लेना चाहिए कि बुद्धि से क्या तात्पर्य है? परिवर्तन क्या है? तथा परिवर्तन बुद्धि की माप कैसे है? हमें यह भी देखना होगा कि जिन्होंने परिवर्तन नहीं किया उनका क्या हुआ?

सबसे पहले **बुद्धि क्या है?**

बुद्धि से तात्पर्य किसी व्यक्ति की चीजों को समझने तथा निर्णय लेने की क्षमता से है। बुद्धि का प्रयोग कर ही मनुष्य अपने लिए सही व गलत की पहचान कर पाता है।

परिवर्तन, समय के साथ चीजों, परिस्थितियों आदि के साथ नयी चीजों के जुड़ने को कहते हैं। यह व्यक्तिगत,

सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि स्तरों पर परिवर्तन एक सामान्य चीज है। जैसे- मध्य काल में कट्टरता के मूल्य की जगह धर्मनिरपेक्षता का मूल्य स्थापित होना।

अब सवाल ये है कि परिवर्तन व बुद्धि तो दो अलग-अलग चीजें हैं, फिर बुद्धि की माप परिवर्तन की क्षमता से कैसे होती है? ये ऐसे होती है कि यदि व्यक्ति, समाज या देश बदलते परिवेश के अनुसार खुद को नहीं बदल पाया तो या तो वह पिछड़ जाएगा या समाप्त हो जाएगा तथा ऐसे में उसे बुद्धिमान तो नहीं ही

माना जाएगा। जैसे- फ्रांस का लुई-16वां अपनी जनता की बदलती रुचियों को नहीं समझ पाया, जिसकी कीमत उसे चुकानी पड़ी।

अगर हम उदाहरणों के माध्यम से समझें तो आसानी से देख सकते हैं कि किस प्रकार परिवर्तन की क्षमता वाले व्यक्ति व समाज ही बुद्धिमान माने गए तथा सफल हुए तथा जो नहीं बदल पाए वो बदल दिए गए।

इतिहास में ऐसे उदाहरण खूब हैं। अशोक का युद्ध मार्ग त्याग कर धम्म मार्ग अपना लेना ही उसे 'अशोक महान' बना गया।

गुप्त काल में ब्राह्मण धर्म ने शूद्रों व महिलाओं को अधिकार दिए तथा जनसुलभ भागवत धर्म अपनाया, यह बदलाव बौद्ध व जैन धर्म की बढ़ती लोकप्रियता के कारण किया गया तथा इसने ब्राह्मण धर्म को अस्तित्व संकट से उबारा।

समकालीन समय में जस्टिस वेंकटेश का उदाहरण दृष्टव्य है, जिन्होंने ट्रांसजेंडर समुदाय के संबंध में पूर्वाग्रह त्यागने के लिए अध्ययन का कार्य किया।

जापान की परिवर्तन करने की क्षमता भी इस संबंध में महत्वपूर्ण उदाहरण है। द्वितीय विश्वयुद्ध के

Pws

विध्वंशात्मक हिंसा के बाद जापान ने शांति की नीति अपनाई तथा अभूतपूर्व प्रगति की। वर्तमान में चीन व रूस जैसे देशों से बढ़ते खतरों के कारण उसने पुनः सैन्य क्षमता बढ़ाने का निर्णय किया है, जो उसकी बुद्धिमत्ता को प्रदर्शित करता है।

क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन तेंडुलकर की एक कहानी इस संबंध में दृष्टव्य है। अपने कैरियर के एक दौर में सचिन टेस्ट क्रिकेट में आफ स्टंप के बाहर की गेंदों पर लगातार आउट हो रहे थे। ऐसे में 2004 में सिडनी टेस्ट में सचिन ने बिना आफ स्टंप के कवर क्षेत्र में एक भी शाट मारे 241 रनों की पारी खेली। यह

दिखाता है कि परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन कर पाने की क्षमता ही महान बनाती है।

अब हम ऐसे भी प्रसंग देख लें जहां परिवर्तन न कर पाना कैसे हानिकारक रहा है। सिंधु घाटी सभ्यता के पतन की एक वजह 700 वर्षों के दौरान भवन निर्माण, मुद्रा, जीवनशैली में आई एकरूपता को भी माना जाता है। आधुनिक युग के प्रसिद्ध समाज सुधारक केशवचंद्र सेन का अपनी पुत्री का बाल विवाह करना भी उनके समय के साथ तादात्म्य न बैठा पाने का उदाहरण है, जिसके बाद उनका महत्व काफी कम हो गया।

समकालीन अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में

देखें तो रूस का बदलते लोकतंत्रात्मक माहौल में न ढल पाना वहां के वर्तमान वैगनर ग्रुप के विद्रोह में जनता की भागीदारी का एक कारण है। इसी प्रकार आर्थिक विचारधारा में पूंजीवाद ने समय के साथ बदलाव कर कल्याणकारी राज्य तथा समतावाद को अपनाया, पर मार्क्सवाद ने कोई परिवर्तन नहीं किया इसलिए जड़ व सीमित होता चला गया।

परंतु क्या हमेशा परिवर्तन को ही बुद्धिमत्ता की माप माना जाएगा? एक तो ज्यादा बदलाव करना भी बुद्धिमत्ता नहीं माना

जाएगा। जैसे - आंध्रप्रदेश का पिछले 3 वर्षों में 3 बार राजधानी बदलने का निर्णय, कहीं से भी बुद्धिमत्ता तो नहीं मानी जा सकती। (थोड़ा politely लिखें)

साथ ही कभी-कभी बुद्धिमत्ता इसमें भी होती है कि किसी की नकल बस ही बदलाव न कर दिया जाए। जैसे - o भारत ने क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी (RCEP), केवल इसीलिए नहीं हस्ताक्षर कर दी कि उसमें सभी क्षेत्रीय शक्तियाँ हैं, वरन् अपने हितों को प्राथमिक रखा। साहिर लुधियानवी ने कहा है -

" ले देकर अपने पास फकत इक नज़र ही तो है।
क्यूं देखें ज़िंदगी को किसी की नज़र से हम।"

कथन को संपूर्ण न्याय देने के लिए वर्तमान समय में इसकी स्थिति की जांच भी की जा सकती है। गहराई से देखने पर भारत की 'राजनीतिक स्वायत्तता' आदि चीजें परिवर्तन का प्रतीक तो हैं, पर बड़े स्तर पर विश्व यथास्थितिवाद का शिकार है। जलवायु परिवर्तन पर 1972 से बस बहसें की जा रही हैं, विकसित देशों ने अभी तक अपनी जिम्मेदारी नहीं उठायी है। निःशस्त्रीकरण भी बस एक जुमला बन कर रह गया है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि परिवर्तन का तत्व ही संसार का सत्य है, तथा एक बुद्धिमान

व्यक्ति, समाज व देश उस हिसाब से खुद को बदल कर आगे बढ़ता है। हर सत्य की तरह इसमें भी कुछ जटिलताएं हैं, पर अंतत: हमें परिवर्तन को स्वीकार करना ही चाहिए। यदि कोई सौरभ कुमार नक्सल क्षेत्र में 'लंच विथ कलेक्टर' शुरू नहीं करेंगे तो हम कैसे उस समाज को विकास की धारा में शामिल कर पाएंगे तथा उनका विश्वास जीत पाएंगे?

7/125

=> बहुत शानदार प्रदर्शन है
इसे बनाए रखें।

Very good

Example diversity & flow is the richness of your essay.